हिन्दी साप्ताहिक

Title Code:- UTTBIL00534

उत्तराखण्ड अभ्युदय

♦वर्ष -02 ♦ अंक-17 ♦देहरादून - रविवार 15 फरवरी 2026 ♦पृष्ठ : 4 ♦मूल्य: 1/-१५

प्रदेश के दूरस्थ गांवों की प्रत्येक समस्या का मौके पर हो समाधान

देहरादून। "जन–जन की सरकार, जन–जन के द्वार" कार्यक्रम के अंतर्गत बृहस्पतिवार को विकासखंड रायपुर के दूरस्थ न्याय पंचायत सरोना में अपर जिलाधिकारी (वि.रा.) केके मिश्रा की अध्यक्षता में बहुउद्देशीय शिविर का आयोजन किया गया। शिविर मुख्य अतिथि कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने विभिन्न विभागों द्वारा लगाए गए स्टालों का निरीक्षण करते हुए जन समस्यएं सुनी। इस दौरान विभिन्न विभागों के माध्यम से 451 लोगों को जनकल्याणकारी योजनाओं का प्रत्यक्ष लाभ प्रदान किया।

शिविर में कृषि विभाग के माध्यम से ज्वालपा माता स्वयं सहायता समूह को फार्म मशीनरी बैंक की खरीद हेतु 4 लाख रुपये का अनुदान चेक प्रदान किया गया। साथ ही किसान महेन्द्र तथा मंजू देवी को 80 प्रतिशत अनुदान पर पावर वीडर वितरित किए गए। बाल विकास विभाग द्वारा 02 महिलाओं को मुख्यमंत्री महालक्ष्मी किट तथा 10 लाभार्थियों को किशोरी किट प्रदान की गई। शिविर के दौरान 17 व्यक्तियों के आधार कार्ड का अद्यतन (अपडेशन) किया गया तथा एक दिव्यांग प्रमाण पत्र भी मौके पर ही निर्गत किया गया।

कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने कहा कि मुख्यमंत्री का संकल्प है कि राज्य के प्रत्येक नागरिक तक सरकार की योजनाओं का लाभ पारदर्शी, सरल एवं समयबद्ध तरीके से पहुंचे तथा कोई भी व्यक्ति बुनियादी सुविधाओं से वंचित न रहे। उन्होंने इस पहल के लिए मुख्यमंत्री के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उनके मार्गदर्शन में यह कार्यक्रम पूरे प्रदेश में संचालित किया जा रहा है, जिसके अंतर्गत अब तक सात लाख से अधिक नागरिकों को प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त हो चुका है। मंत्री ने कृषि विभाग के अधिकारियों को प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के लाभार्थियों की ई–केवाईसी हेतु सुवाखोली एवं सहस्त्रधारा में विशेष शिविर आयोजित करने के निर्देश दिए। साथ ही स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को 'रीप' परियोजना के अंतर्गत

सीएलएफ से जोड़ने के लिए भी विशेष शिविर आयोजित करने को कहा।

कैबिनेट मंत्री ने कहा कि वीबी–जी रामजी योजना ग्रामीण भारत के सर्वांगीण विकास की दिशा में एक सशक्त पहल है। उन्होंने बताया कि चालू वित्तीय वर्ष में इस योजना के संचालन के लिए भारत सरकार द्वारा बजट को 6 प्रतिशत से बढ़ाकर 9 प्रतिशत कर दिया गया है। योजना के अंतर्गत रोजगार दिवस 100 से बढ़ाकर 125 कर दिए गए हैं तथा समय पर मजदूरी भुगतान सुनिश्चित करने के लिए विशेष प्रावधान किए गए हैं। शिविर में लोक निर्माण विभाग, प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना के अधिशासी अभियंता तथा रीप परियोजना के सक्षम अधिकारी के अनुपस्थित रहने पर कैबिनेट मंत्री ने नाराजगी व्यक्त करते हुए तीनों अधिकारियों से स्पष्टीकरण तलब किया।

अपर जिलाधिकारी (वित्त एवं राजस्व) के.के. मिश्रा ने कहा कि जनता की समस्याओं का त्वरित समाधान करना प्रशासन की सर्वोच्च प्राथमिकता है। उन्होंने संबंधित विभागों को निर्देश दिए कि प्राप्त शिकायतों का समयबद्ध एवं प्रभावी निस्तारण सुनिश्चित किया जाए।

कार्यों को गुणवत्ता के साथ पूर्ण कराना सुनिश्ति करें

देहरादून। मुख्य सचिव आनन्द बर्द्धान की अध्यक्षता में गुरुवार को सचिवालय में व्यय वित्त समिति की बैठक आयोजित हुई बैठक में विभिन्न विभागों के योजना प्रस्तावों को वित्तीय स्वीकृति प्रदान की गई। मुख्य सचिव ने सभी संबंधित विभागीय उच्च अधिकारियों को निर्देश दिये कि निर्माण कार्यों के साथ ही अन्य संबंधित प्रस्तावों के क्रियान्वयन की समय सीमा निर्धारित करते हुए कार्यों को गुणवत्ता के साथ पूर्ण कराना सुनिश्ति किया जाये।

मुख्य सचिव ने जनपद चम्पावत के अन्तर्गत रोडवेज स्टेशन चम्पावत में आधुनिक सुसज्जित स्टोरी पार्किंग व शॉपिंग कॉम्प्लैक्स के निर्माण लागत रू 64.94 करोड़ के प्रस्तावों को संस्तुति प्रदान करते हुए इसका नाम सिटी सेंटर चम्पावत रखे जाने के निर्देश दिये। उन्होने इसमें यात्रियों एवं स्थानीय जनता को बेहतर सुविधायें उपलब्ध कराने, स्थानीय उत्पादों के विपणन की व्यवस्था तथा पार्किंग स्थल पर रोडवेज की बसों के साथ ही टैक्सी पार्किंग की भी व्यवस्था करने को कहा ताकि इससे आम जनता को और अधिक सुविधा हो सके। मुख्य सचिव ने जनपद टिहरी गढ़वाल के अन्तर्गत टिहरी मुख्यालय के माल रोड़ में फसाड कार्य रेलिंग्स, पाथ, स्ट्रीट लाइट, शौचालय निर्माण किये जाने आदि के प्रस्तावित कार्यों हेतु 11.25 करोड कि संस्तुति प्रदान करते हुए कहा कि टिहरी नगर में फसाड़ कार्य, रेलिंग्स, पाथ, स्ट्रीट लाईट एवं शौचालय का निर्माण से आम जनमानसध्पर्यटकों को सुविधा प्राप्त हो सकेगी।

व्यय वित्त समिति की बैठक में मुख्य सचिव द्वारा शैक्षिक सत्र 2025–26 में राज्य के राजकीय एवं राजकीय सहायता प्राप्त अशासकीय विद्यालयों में कक्षा 1 से 12 तक अध्ययनरत समस्त छात्र–छात्राओं को निःशुल्क नोटबुक उपलब्ध कराये जाने हेतु माध्यमिक शिक्षा विभाग हेतु 52. 84 करोड़ की संस्तुति प्रदान की गई।

पैरा बैडमिंटन में प्रेम कुमार ने जीता स्वर्ण

संवाददाता देहरादून। युवा कल्याण विभाग द्वारा आयोजित मुख्यमंत्री चैंपियनशिप ट्रॉफी 2025 के अंतर्गत दिव्यांगजन खिलाड़ियों के लिए आयोजित खेल महाकुंभ में पैरा बैडमिंटन प्रतियोगिता में प्रेम कुमार ने शानदार प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण पदक अपने नाम किया। प्रतियोगिता 12 से 13 फरवरी तक देहरादून के आमवाला स्थित बैडमिंटन कोर्ट में आयोजित की जा रही है। फाइनल मुकाबले में प्रेम कुमार ने ऊधमसिंह नगर (यूएस नगर) के खिलाड़ी दीपक कुमार को सीधे सेटों में 21–15, 21–8 के अंतर से पराजित कर स्वर्ण पदक हासिल किया। मुकाबले में प्रेम कुमार ने शुरू से ही आक्रामक खेल का प्रदर्शन करते हुए प्रतिद्वंद्वी पर दबाव बनाए रखा।

गोरखा हिमालयन फेस्टिवल में जुटेंगे देशभर के कलाकार

संवाददाता देहरादून। गढ़ी कैंट स्थित महेंद्र ग्राउंड में 20, 21 और 22 फरवरी को होने वाले तीन दिवसीय श्गोरखा हिमालयन फेस्टिवलश में देशभर के कलाकार जुटेंगे। शहीद दुर्गा मल्ल मेमोरियल ट्रस्ट के साथ गोर्खाली सुधार सभा इसमें विशेष सहयोग कर रही है। कार्यक्रम की जानकारी देते हुए ट्रस्ट की अध्यक्ष कमला थापा ने बताया कि इस फेस्टिवल में हिमालय क्षेत्र की संस्कृति, खानपान और विविधता देखने को मिलेगी। 20 फरवरी को कार्यक्रम की शुरुआत सुबह 7 बजे साइक्लोथॉन मिनी रैलीश के फ्लैग ऑफ से होगी। शाम को श्पंचे बाजाश और श्नौबती बाजाश से प्रदर्शनी और मेले का उद्घाटन होगा। जम्मू का एम. जैक्सन सांस्कृतिक संस्थान, दार्जिलिंग की मशहूर सिंगर सुरक्षा सिंचुरी, सिलीगुड़ी के गायन, विक्रम कालिकोटे और विशाल ग्रुप का पारंपरिक लाखे–कुमारी डांस दर्शकों को मंत्रमुग्ध करेगा।

सम्पादकीय

राष्ट्रीय शीतकालीन प्रतियोगिता

हिमप्रदेशेषु जायन्ते क्रीडा: साहसवर्धका:।
शीतकालेऽपि यत्रास्ति उत्साहो नित्यवर्धक:।।
देशप्रेमेण संयुक्ता क्रीडा राष्ट्रं प्रकाशयेत्।।
राष्ट्रीय शीतक्रीडा सा युवशक्तिं विकासयेत् ।।

अर्थात

हिमालयी प्रदेश में साहस को बढ़ाने वाले खेल हो रहे हैं।कठोर शीत ऋतु में भी यहाँ उत्साह निरंतर बढ़ते रहते हैं। ये क्रीड़ाएँ राष्ट्र को गौरवान्वित करती हैं।राष्ट्रीय शीतकालीन खेल युवा शक्ति के विकास का सशक्त माध्यम बनते हैं।

चमोली जिले के औली में आयोजित हो रहे राष्ट्रीय शीतकालीन प्रतियोगिता 2026 भारत में आयोजित होने वाला एक महत्वपूर्ण खेल प्रतियोगिता है।इसमें शीतकालीन खेलों को बढ़ावा दिया जाता है। यह प्रतियोगिता प्राय: ठंडे पर्वतीय क्षेत्रों में आयोजित होती है, जहाँ बर्फ पर खेले जाने वाले खेलों जैसे स्कीइंग, आइस हॉकी, स्नोबोर्डिंग आदि का आयोजन किया जाता है।

इसका उद्देश्य खिलाड़ियों में खेल भावना, अनुशासन और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करना है। साथ ही यह प्रतियोगिता युवाओं को अंतरराष्ट्रीय स्तर के शीतकालीन खेलों के लिए तैयार करने में भी सहायक होती है।

– प्रतियोगिता में हिमाचल प्रदेश, पंजाब, जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, उत्तराखंड, हरियाणा, महाराष्ट्र, तेलंगाना, उड़ीसा, गुजरात, सेना, आईटीबीपी, सीआरपीएफ सहित 17 टीमें प्रतिभाग कर रही हैं।इसमें विंटर कार्निवल भी आयोजित है। जिसमें स्नो शू रेस (महिला तीन व पुरुष पांच किमी), स्नो मैराथन, बच्चों का स्नो गेम, योगा इन स्नो, नाइट स्कीइंग शामिल रहेंगे।

जय देवभूमि उत्तराखंड!!जय भारत!!

डॉ गार्गी मिश्रा

वैचारिक सकारात्मकता से आंतरिक खुशी

दिनेश चमोला 'शैलेश'

जीवन को सुचारु रूप से चलाने के लिए जितनी आवश्यकता भौतिक संसाधनों की होती है, उससे भी अधिक आंतरिक अनुकूलताओं व भाव-विचारों की सकारात्मकता की भी होती है। वैचारिक सकारात्मकता का एक उत्तम बीज बाहरी संसार की सम्पूर्ण दशा व दिशा बदल सकता है। लेकिन दूसरी ओर मन की दुर्बलताओं से उपजा केवल एक विषाक्त बीज ही बाहर के अथवा जीवन के खिलखिलाते संसार को तहस-नहस कर सकता है।

भाव रूप में पनपने वाला यह सुबीज व कुबीज ही क्रमश: चिंतन, सृजन, भक्ति व तनाव, दुख तथा पाप बनकर जग व जीवन को सुगंधित व कलुषित करता है। सृजन, मनुष्य व मानवता का सुमित्र है, जबकि तनाव सबका घातक शत्रु व दैत्य के सदृश।

तनाव रूपी दैत्य केवल मनुष्य को मानसिक रूप से ही नहीं तोड़ता, बल्कि यह उसके भीतर से अच्छे काम करने अथवा सोचने की क्षमता को भी निर्मूल कर उसकी सही सोच व सृजन क्षमता को भी बाधित करता है। इसके चलते व्यक्ति किसी अच्छे कार्य को अंजाम तक नहीं पहुंचा सकता। उसकी संपूर्ण शक्ति नकारात्मक चीजों अर्थात वैसे कामों को करने की सोच व विचार के ही उधेड़बुन में लगी रहती है।

केलिफोर्निया विश्वविद्यालय के प्रो. डेविड डी.केन ने अपनी पुस्तक 'स्ट्रेस मैनेजमेंट एंड प्रिवेंसन' में तनाव क्या है, रोकथाम के उपाय, इससे संबंधित पूर्वी तथा पश्चिमी विचारों के साथ-साथ शरीर पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों जैसे विषयों पर चर्चा की है। इसको नियंत्रित करने के लिए स्वयं की जागरूकता, समय प्रबंधन कौशल तथा आध्यात्मिकता से पूर्ण परिवेश भी सहायक सिद्ध हो सकता है।

ऐसी स्थिति में वह अपनी क्षमताओं को नहीं पहचान सकता व अपनी नकारात्मक भावनाओं का शिकार हो स्वयं को एक तरह से रोगी ही बना डालता है। जीवन में ऐसी विकट स्थिति से उबरने के लिए कोई बाहर से जादुई छड़ी आकर अपना चमत्कार दिखाकर उसे उबारेगा नहीं, बल्कि उसे स्वयं ही इस भंवर से बाहर निकलने का मार्ग तलाशना होगा।

विपत्ति के समय पशु भी सूझबूझ से काम लेकर अपने विवेक से अपनी सहायता करता है। यह मनुष्य ही है जो इससे बाहर निकल अपनी शक्ति व सोच को सही दिशा में लगाकर अपने कुछ खास होने का परिचय दे सकता है। ऐसी स्थिति से उबरने के अनेक उपाय हो सकते हैं लेकिन पुस्तकें पढ़ना इनमें से सबसे कारगर सिद्ध हो सकता है।

ससेक्स विश्वविद्यालय में 2009 में किए गए एक अध्ययन से स्पष्ट हुआ है कि पुस्तकों को पढ़ने से 68 प्रतिशत मानसिक तनावों में कमी आई है। यह माध्यम कॉफ़ी हाउस में गरमागरम कॉफी पीने तथा किसी अच्छे संगीत सुनने से भी अच्छे परिणाम देने वाला सिद्ध हुआ है।

इसका कारण यह है कि साहित्य आपको तनाव की पेचीदी दुनिया से कहीं दूर ले जाकर चिंतन व सोच की हरी-भरी आनंददायी वादियों में विचरण कराता है जहां खुशी और रस के अलावा दूसरे किसी भाव को स्थान नहीं है। इसलिए प्रतिदिन अपनी पसंद की पुस्तकें पढ़ने की आदत डालो। यह कोई आवश्यक नहीं कि पढ़े जाने वाली पुस्तक उस क्षेत्र अथवा विषय की बेस्ट सेलर पुस्तक हो अथवा नहीं।

स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी के जीवविज्ञान तथा न्यूरोलॉजी विभाग के प्रोफेसर रोबर्ट सापोल्स्की ने अपनी पुस्तक 'व्हाइ ज़ेब्रास डोंट गेट स्ट्रेस' में इन बातों का बारीकी से प्रामाणिक विश्लेषण किया है। अपनी एक अन्य पुस्तक में उनका मानना है कि नकारात्मकता किस प्रकार हमारे स्वस्थ मस्तिष्क को बीमार बनाकर तनाव की दलदल में धंसा देती है, अत: इस सबसे बाहर निकलने का एक ही मार्ग हैज्सही सोच व उचित दिशा की ओर क्रमश: बढ़ते चले जाना।झेएक अन्य पुस्तक 'फ्रॉम स्ट्रेस टु स्टिलनेस = टूल्स फॉर इन्नर पीस' नामक पुस्तक में लेखक गायना लेक ने बहुत अच्छे तरीके से तनाव से मुक्ति पाने तथा आंतरिक खुशी बटोरने के व्यावहारिक मुद्दों पर अपने विचार प्रस्तुत किये हैं। तनाव से शरीर पर क्या दुष्प्रभाव पड़ सकते हैं, यह किस प्रकार हमारी सही सोच के मित्रों की हत्या कर जीवन में नकारात्मक शत्रुओं के बीज बोकर हमारे जीवन को बोझिल बना डालता है; इस पर कैसे जीत पायी जा सकती है, का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है।

शिक्षा की विसंगतियों से जूझती पीढ़ी

सुरेश सेठ

यह भोपाल से डेढ़ सौ किलोमीटर दूर ग्रामीण अंचल में अचानक चर्चित हो गया महुआ का पेड़ है, जिसके बारे में अन्धविश्वास फैल गया कि उसे छूने भर से लोगों के दुनियाभर के रोग जड़ से खत्म हो जाते हैं। ऐसे ही पंजाब का डेराबड़भाग सिंह का मेला है जहां आज भी मानसिक व्याधियों से मुक्ति के लिए लाखों लोगों की भीड़ जुटती है, क्योंकि कहा जाता है कि इन रोगियों पर भूत-प्रेतों अथवा बुरी आत्माओं का साया है। इस मेले अथवा इस पेड़ के आशीर्वाद से इसका निवारण हो जायेगा।

पंजाब, हिमाचल और हरियाणा में दूर-दूर तक निकल जायेंगे तो आपको यहां-वहां बहुत से सिद्ध पुरुष मिल जायेंगे, जो अपने आशीर्वाद से लोगों के संकट, दुःख और कष्ट हरने का दावा करते हैं। इस धर्म 'परायण' देश में सदियों से कथित इन चमत्कारों की किंवदंतियां पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्रचलित रही हैं। धीरे-धीरे लोगों की यह आस्था और धर्मक्षेत्रों के इन नायकों के लिए सहज श्रद्धा का भाव नायक पूजा में ?तबदील हो गया। देश के अन्य भागों की तरह इन तीनों राज्यों में भी ऐसे डेरे और आश्रम उभर आये हैं, जहां हर पुण्य दिवस पर बड़े-बड़े मेले लगते हैं। वहां अपनी श्रद्धा एवं सेवा अर्पित करते हुए लोग अपना जन्म सफल मानते हैं।

आखिर देखते ही देखते इन डेरों, आश्रमों और सम्प्रदायों के स्वामी कैसे हजारों करोड़ रुपये की सम्पदा के स्वामी हो गये ? कैसे उनके धार्मिक आभामंडल में राजनीति ने घुसपैठ कर ली ? कैसे राजनीतिज्ञ अपना चुनाव जीतने के लिए इन डेरों के आशीर्वाद के लिए चक्कर लगाने लगे ? एक विसंगति अवश्य मन को सालती है कि इस लगभग पौन सदी की आजादी में जहां राजनीति के लिए उदीयमान, प्रखर, शिक्षित युवकों का नेतृत्व होना चाहिए था, देश में अनुसंधान, शोध और अध्ययन की नयी खोज की ललक होनी चाहिए थी, वहां प्राथमिक शिक्षा को देश के नौनिहालों का संवैधानिक मौलिक अधिकार घोषित होने के बावजूद इसके द्वारा देश की निर्धन बहुसंख्यक जनसंख्या के लिए द्वार क्यों नहीं खुले ?

देश के कुछ राजनीतिक दल कहते हैं कि धर्म को राजनीति से अलग नहीं किया जा सकता। इसके लिए कौटिल्य का उद्धरण भी दिया जाता है। लेकिन इसे तभी सही माना जा सकता है, अगर राजनीति धर्म के आधार पर चले, न कि धर्म में राजनीति की जाये या इसकी बैसाखियों के सहारे जीवन में सफलता, कुर्सी की प्राप्ति और भौतिकता के शिखर विजित करने का प्रयास किया जाये।

आज पंजाब, हरियाणा और हिमाचल के राज्यों में कोई भी ऐसा नहीं, जिसने अपने नौनिहालों को शिक्षा देने का संवैधानिक अधिकार देना स्वीकार नहीं किया। भारत सरकार ने इस कानून को सन् 2010 में पारित कर दिया था, लेकिन इसके के रास्ते में आज भी अवरोध के विंध्याचल खड़े हैं। पंजाब और हरियाणा का तो यह हाल है कि इसमें अस्सी प्रतिशत शिक्षा निजी क्षेत्र द्वारा दी जाती है। बड़े-बड़े धनपति घरानों ने अपने राष्ट्रीय फ्रैंचाइज के नाम पर इन राज्यों में पब्लिक स्कूल कल्चर का सिलसिला शुरू कर रखा है। यहां की भारी-भरकम फीसें आम आदमी की जेब से बाहर हैं।

पिछले बरसों में सरकार ने इस पब्लिक स्कूल कल्चर के दुर्भेद किलों को तोड़ने का बार-बार प्रयास किया। इन सब प्रतिष्ठित पब्लिक स्कूलों को सरकार ने जमीन रियायती कीमत पर दी थी, इस शर्त के साथ कि वे अपनी कुछ प्रतिशत सीटें निर्धन बच्चों को दे देंगे, जिसकी फीस और खर्चा सब सरकार अपने कोष से करेगी। लेकिन लगभग सभी बड़े स्कूलों ने सरकार के इस आश्वासन पर भरोसा नहीं किया। निर्धन बच्चों को इन सीटों पर दाखिला नहीं मिला। ये आलीशान शिक्षा संस्थान बार-बार इस आदेश के विरुद्ध स्टे ले आये। पब्लिक स्कूल कल्चर उच्च अथवा समर्थ वर्ग के लिए अभी तक भी आरक्षित है।

पंजाब ने पब्लिक स्कूल कल्चर को घर-घर पहुंचाने के लिए कुछ वैकल्पिक प्रयोग किये हैं। सबसे पहले तो पूरे राज्य में आदर्श स्कूलों का जाल बिछाने का प्रयास किया गया। बाद में कुछ नवोदय स्कूल खोले गये। इसके लिए विशेष भर्ती भी की गयी। परन्तु नौकरशाही का एक ढर्रा है और सम्भवत= लालफीताशाही बच के निकलने के ऐसे चोर दरवाजे खोल देती है कि शिक्षा क्रांति के नारों के बावजूद यह क्रांति किसी जमीनी धरातल पर दिखायी नहीं दिया। जब इन स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों के परीक्षा परिणाम सामने आये तो वह किसी भी दृष्टि से सरकारी स्कूलों के औसत शिक्षा परिणामों से अधिक नहीं थे। महंगे स्कूलों का पब्लिक स्कूल कल्चर इसी प्रकार उभरता रहा और औसत दर्जे के मध्यवर्गीय परिवार आज भी अपनी आर्थिक स्थिति दांव पर लगाकर इन्हीं स्कूलों में दाखिले के लिए दौड़भाग करते नजर आते हैं।

पिछले कुछ बरसों में पंजाब सरकार ने अस्सी प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले प्रतिभावान छात्रों के लिए मैरिट स्कूलों को खोलने की महत्वाकांक्षी योजना शुरू कर रखी है। इन स्कूलों में दाखिला प्राप्त कर सकने वाले छात्रों का सारा खर्चा सरकार खुद वहन करती है। लेकिन इन छात्रों की योग्यता का स्तर क्या है ? स्कूलों की दाखिला परीक्षाओं में उच्च अंक प्राप्त मैरिट छात्र आसानी से पास नहीं हो पाते। आधे से अधिक सीटें खाली रह जाती हैं, जिनके लिए पुन= परीक्षा लेते हुए इन मैरिट छात्रों का अंक प्रतिशत घटा भी दिया जाये तो भी कुछ सीटें खाली रह जाती हैं। निश्चय ही यह आज की शिक्षा प्रणाली, परीक्षा विधि, अध्यापन और अध्ययन क्षमता पर बहुत बड़ा प्रश्न है। अभी तक नयी शिक्षा नीति ऊहापोह की स्थिति में है। उसका अन्तिम प्रारूप सामने नहीं आया।

देश में सर्वशिक्षा अभियान चलाया गया। इसे लक्ष्य तक पहुंचाने की जिम्मेदारी सरकारी स्कूलों को दी गयी। पंजाब और हरियाणा के स्कूलों ने प्राथमिक शिक्षा के लिए कागजी खानापूरी के लिए सौ प्रतिशत दाखिले दिखा दिये। लेकिन बाद में जब वास्तविक सर्वेक्षण हुए तो पाया गया कि इनमें से आधे छात्र दाखिले के बाद नदारद हो गये थे।

इम्यूनिटी बढ़ाने के साथ ही कई बीमारियों से भी बचाता है चिलगोज़ा, जानिए 7 बेहतरीन फायदे

सर्दी में ड्राईफ्रूट्स का सेवन ना सिर्फ बॉडी को गर्म रखता है, बल्कि आपको कई मौसमी बीमारियों से भी महफूज़ रखता है। चिकगोज़ा शायद आपने इसका नाम सुना हो, जो एक ऐसा ड्राईफ्रूट है जो खाने में बेहद टेस्टी लगता है साथ ही उसके स्वास्थ्य लाभ भी ज्यादा है। चिलगोज़ा एक ऐसा सुपरफूड है जो सर्दी में इम्यूनिटी मजबूत करता है साथ ही कमजोरी भी दूर करता है। बॉडी में प्रोटीन और विटामिन की कमी है तो डॉक्टर सलाह देते हैं कि चिलगोज़ा खाएं। वैसे तो सभी ड्राईफ्रूट्स में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट और फाइबर भरपूर मात्रा में मौजूद रहता है, लेकिन चिलगोजा विटमिन्स, फाइबर और प्रोटीन का बेस्ट सोर्स होता है। अगर आप सर्दी में रोज चिलगोजे का सेवन करते हैं तो बॉडी गर्म रहती है साथ ही कई बीमारियों से महफूज भी रहती हैं। आइए जानते हैं चिलगोज़े के बॉडी को कौन-कौन से फायदे पहुंचते हैं।

भूख कम लगती है तो चिलगोज़ा खाएं

चिलगोज़े को आप बहुत आसानी से छील कर खा सकते हैं। चिलगोज़े में पिनोलैनिक ऐसिड पाया जाता है। 10 ग्राम चिलगोजे में 0.6 मिलीग्राम आयरन होता है। चिलगोजे में विटमिन क्र और ष्ट भरपूर मात्रा में पाया जाता है। अगर आपको भूख कम लगती है तो आप चिलगोज़ा खाएं, इसमें मोनोसैच्युरेटेड फैट होता है जो भूख को बढ़ाता है।

कलेस्ट्रॉल घटाने में सहायक

चिलगोज़े में टोकोफेरोल पाया जाता है जो एक पावरफुल ऐंटिऑक्सिडेंट है। ये शरीर से बैड कलेस्ट्रॉल को कम करता है और दिल की बीमारियों से बचाता है। कलेस्ट्रॉल के बढ़ने से दिल की बीमारियों का खतरा बहुत ज्यादा बढ़ जाता है। चिलगोजे में मौजूद अनसैच्युरेटेड फैट कलेस्ट्रॉल घटाने में बेहद मददगार है।

इम्यूनिटी बढ़ाता है

चिलगोजे के सेवन से शरीर की इम्यूनिटी बढ़ती है। चिलगोजे में ऐंटिबैक्टीरियल और ऐंटिवायरल गुण होते हैं, जिसके कारण ये शरीर में मौजूद हानिकारक केमिकल्स से रक्षा करता है और इसमें मौजूद ऐंटिऑक्सिडेंट्स शरीर के इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाता है। चिलगोजे के तेल का उपयोग कई ऐंटिसेप्टिक दवाओं और ऐंटि-फंगल क्रीम में भी किया जाता है।

प्रेग्नेंसी में बेहद फायदेमंद

गर्भावस्था में चिलगोज़े का सेवन बहुत फायदेमंद होता है। लाइसिन एक जरूरी अमीनो ऐसिड है, जो चिलगोजे में पाया जाता है। इसके इस्तेमाल से अनीमिया नहीं होता है और ये भ्रूण के स्वस्थ विकास में भी सहायतक होता है।

पुरुषों में फर्टिलिटी बढ़ात

चिलगोजे का फैटी ऐसिड सेक्शुअल फर्टिलिटी को बरकरार रखने में और स्पर्म प्रॉडक्शन के साथ ही टेस्टोस्टेरॉन को बढ़ाने में मदद करता है जिससे आपकी ओवरऑल सेक्शुअल हेल्थ बरकरार रहती है।

इस बीमारी से बचने के लिए अपनी डाइट पर सबसे पहले ध्यान दें।

खांसी और दमा का इलाज

दमा के मरीज़ों के लिए चिलगोज़ा बेहद फायदेमंद है। चिलगोजा की 5-10 ग्राम गिरी को पीस कर इसमें शहद मिलाकर सेवन करने से दमा में फायदा होता है।

गठिया में लाभ

चिलगोजा के तेल को लगाने से गठिया का दर्द ठीक होता है। चिलगोजा की गिरी का सेवन करने से हाथ-पैर की कमजोरी दूर होती है, और शरीर स्वस्थ होता है।

बालों की ग्रोथ बढ़ाना चाहती हैं तो अदरक, नारियल और आरंडी का मास्क लगाएं, जानिए रेसिपी

खूबसूरत लंबे बाल गॉड गिफ्ट है,

जिसकी चाहत हर औरत की होती है। जिन महिलाओं के लंबे बाल नहीं होते वो बालों के लिए बाजार में मौजूद तरह-तरह के तेल और शैंपू का इस्तेमाल करती हैं।

कई बार इन प्रोडक्ट्स को लगाने से इनके साइड इफेक्ट्स भी होते हैं। बालों की ग्रोथ लंबी करना चाहती हैं तो आप दवा और शैंपू के चक्कर में मत पड़े, बल्कि घर में ही नारियल,अदरक और आरंडी का तेल इस्तेमाल करके मास्क लगाएं।

100 से ज्यादा औषधीय गुणों से भरपूर अदरक आपके बालों की ग्रोथ बढ़ाने में मददगार है। नारियल का तेल में विटामिन के और ई होता है जो हेयर फॉलिकल्स को हेल्दी रखता है और डैंड्रफ भी दूर करता है। आरंडी के तेल में एंटी-बैक ?टीरियल और एंटीफंगल गुण हैं, जो आपके डैमेज बालो को ठीक कर खुजली और डैंड्रफ का सफाया करते हैं। यह आपको बालों से जुड़ी हर समस्याओं से छुटकारा दिला सकता है। अदरक, नारियल तेल और आरंडी के तेल का मास्क आपके बालों की ग्रोथ बढ़ाएंगा साथ ही बालों को पोषण भी देगा। आइए जानते हैं कैसे इस लिक्विट हेयर मास्क को तैयार करें।

ब्लैक टी स्किन और बालों पर मैजिक करती है, जानिए इसके फायदे

चाय एक ऐसा पेय पदार्थ है जिसका इस्तेमाल पूरी दुनिया में किया जाता है।

शायद आपको नहीं पता चाय आपकी स्किन और बालों के लिए बेस्ट टॉनिक है। एंटीऑक्सीडेंट गुणों से भरपूर चाय आपकी स्किन से टॉक्सिन बाहर निकाल कर स्किन सेल्स को पुनर्जीवित करती है। बाजार में कई तरह की चाय मौजूद है लेकिन हम यहां आपको ब्लैक टी के स्किन और बालों को होने वाले फायदों के बारे में बता रहे हैं। आइए जानते हैं किस तरह ये स्किन और बॉलों को फायदा पहुंचा सकती है।

आंखों के पास रिंकल्स आ गए है तो टी बैग का इस्तेमाल कीजिए। इसके इस्तेमाल से आंखों के पास की स्किन टाइट रहती है और फाइन लाइन से भी छुटकारा मिलता है। आप हर सुबह आंखों के पास टी बैग का इस्तेमाल करके रिंकल्स से छुटकारा पा सकते हैं।

आंखों की पफीनेस दूर करता है टी बैग

कुछ लोगों की सुबह-सुबह आंखें सूजी हुई रहती हैं, अगर आप भी सुबह-सुबह सूजी आंखों से परेशान रहती है तो टी बैग का इस्तेमाल कीजिए। कोल्ड टी बैग आपकी आंखों के पास की स्किन को टाइट करेगा। चाय में कैफीन की थोड़ी मात्रा होती है, इसमें मौजूद एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण आसानी से आंखों की पफपन को कम करने में मदद करते हैं।

बालों की चमक बढ़ाती है काली चाय

बालों को काला करने के लिए नेचुरल डाई है ब्लैक टी। बालों को धोने के बाद ब्लैक टी का इस्तेमाल करने से बाल काले और चमकदार हो जाते हैं। अगर आप अपने बालों को रंगना चाहती है या फिर ग्रे हेयर को कवर करना चाहती हैं तो मेहंदी में ब्लैक टी का इस्तेमाल करके बालों पर लगा सकती हैं।

दाग धब्बों से छुटकारा दिलाती है

एंटीऑक्सीडेंट गुणों से भरपूर ब्लैक टी चेहरे के दाग धब्बों से छुटकारा दिलाती है। ये स्किन से टॉक्सिन निकालती है। यदि स्किन पर दाग है तो ब्लैक टी का इस्तेमाल करें। इसके इस्तेमाल से दाग कम होते हैं साथ ही स्किन टोन में भी निखार आता है। ब्लैक टी का इस्तेमाल करते समय ध्यान दें कि वो गर्म नहीं हो।

क्लासरूम वाली पढ़ाई

करीब दस महीनों से बंद पड़े स्कूल अब खुलने लगे हैं। पंजाब, हरियाणा, राजस्थान से लेकर कर्नाटक और केरल तक कई राज्यों की सरकारें कुछ नियमों और शर्तों के साथ स्कूल खोलने की इजाजत दे रही हैं। इतनी लंबी अवधि तक स्कूलों का बंद रहना सबके लिए नुकसानदेह साबित हुआ है। कहने को इस दौरान ऑनलाइन क्लासेज चलती रही हैं, लेकिन आर्थिक, सामाजिक और बौद्धिक स्तर पर अलग-अलग स्थिति वाले बच्चों के व्यक्तित्व विकास को ध्यान में रखें तो स्कूल जाकर क्लासरूम में पढ़ाई करने की कोई तुलना ऑनलाइन पढ़ाई से नहीं हो सकती। इसके अलावा यह भी मानना पड़ेगा कि ऑनलाइन कक्षाओं का चलन बच्चों में और भी दुखद श्रेणी विभाजन का कारण बना है। महानगरों में रहनेवाले साधनसंपन्न परिवारों के बच्चों का एक छोटा तबका ही कायदे से ऑनलाइन क्लासेज का फायदा उठा पाया है। अव्वल तो सारे स्कूलों में यह सुविधा ही मौजूद नहीं है, और जहां है वहां भी लैपटॉप और मोबाइल तक सीमित पहुंच तथा बिजली और नेटवर्क जैसी बाधाओं के चलते ज्यादातर बच्चे क्लास की सारी बातें नहीं समझ पाए। एक ही क्लास में जानकारी के अलग-अलग स्तर वाले बच्चों को लेकर आगे बढ़ना शिक्षकों के लिए बड़ी चुनौती साबित होने वाला है। मगर बात इतनी ही नहीं है। दस महीने की इस बंदी ने शिक्षा का ढांचा ढह जाने का खतरा पैदा कर दिया है। स्कूलों के वित्तपोषण से जुड़ी एक कंपनी आईएसएफसी द्वारा करवाए गए सर्वे के मुताबिक देश के 17.06 फीसदी स्कूल ऐसे रहे जहां इस साल फीस के नाम पर कुछ भी जमा नहीं हो पाया। 59.74 फीसदी स्कूलों में फीस कलेक्शन 40 प्रतिशत से भी कम रहा। स्वाभाविक रूप से इसका असर स्टाफ की सैलरी पर पड़ा। सर्वे के मुताबिक 26.49 फीसदी स्कूलों ने कर्मचारियों की छंटनी करने और 36.43 फीसदी ने वेतन में कटौती करने की बात स्वीकार की। जाहिर है, यह स्थिति लंबे समय तक नहीं चल सकती। राज्य सरकारों द्वारा स्कूल खोलने की इजाजत देने का एक रिश्ता इस संकट से भी है। रहा सवाल महामारी का तो रोजाना नए संक्रमणों की संख्या भारत में भले कम हो गई हो, लेकिन वायरस का खतरा कम नहीं हुआ है। खासकर ब्रिटेन से फैल रहे कोरोना वायरस के नए स्ट्रेन ने स्कूलों के लिए मुश्किल और बढ़ा दी है।

राजकीय कर्मचारी घोषित कर उचित मासिक मानदेय देने की मांग

पुरोला। पुरोला मोरी विकासखण्ड में आशा कार्यकत्रियों व फेसिलिटेटर ने संगठन के बैनर के तत्वावधान में गुरुवार को अपनी विभिन्न मांगों को लेकर

धरना प्रदर्शन किया। अस्पताल परिसर में एकत्रित हुई पुरोला व मोरी के विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों से आई आशा कार्यकत्रियों ने अस्पताल से कुमोला रोड व मुख्यबाजार में जूलूस प्रदर्शन करती हुई तहसील प्रांगण तक पँहुची जंहा उपजिलाधिकारी मुकेश चंद रमोला के माध्यम से मुख्यमंत्री को अपनी मांगों को लेकर ज्ञापन प्रेषित किया।

ज्ञापन में कहा गया है कि आशा कार्यकत्रियां व फेसिलिटेटर प्रदेश में 15 वर्षों से अधिक लम्बे समय से विषम परिस्थितियों में स्वास्थ्य सेवाओं में योगदान दे रही हैं ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं की रीढ़ आशा कार्यकत्रियां आज उपेक्षा का शिकार हो रही हैं। कहा कि विगत कई वर्षों से आशाएं समय समय पर राजकीय कर्मचारी घोषित कर नियत मानदेय की मांग करती आ रही हैं लेकिन हर बार मांगों पर कोरे आश्वासन दिए गए वंही सरकार पर उपेक्षा व वादाखिलाफी का आरोप लगाते हुए मांगो पर शीघ्र सकारात्मक कार्यवाही की मांग की। आशाओं ने कहा कि सरकार हमारी उपेक्षा कर रही है पूरा जीवन हमने इतने कम मानदेय में खपा दिया है।

कहा कि हम लोग स्वास्थ्य जैसे महत्वपूर्ण व आवश्यक सेवाओं में योगदान दे रही हैं लेकिन सरकार केवल हमे प्रोत्साहन राशि देकर हम लोगों का मनोबल तोड़ने का काम कर रही है। कहा कि आज इतनी मंहगाई हो गयी है कि केवल प्रीतिषित पर बच्चों का पालन पोषण करना कठिन है।

संगठन की गीता नौटियाल,मीना जोशी ने बताया कि कोरोना जैसी महामारी में हम लोगों ने अपनी और अपने परिवार की परवाह किये बगैर बिना सुबिधाओं के दिन–रात कार्य किया। धरना प्रदर्शन में गीता नौटियाल,मीना जोशी, मीना भंडारी, अंजना, कविता, संगीता, ममता, निर्मला, सीमा, सुचिता, ज्योति,शिश्मा, रजनी देवी आदि दर्जनों कार्यकत्रियां व फेसिलेटर मौजूद रही।

परीक्षा केन्द्रों पर शांति व्यवस्था को केन्द्र व्यवस्थापक होंगे विशेष कार्यपालक मजिस्ट्रेट

संवाददाता चमोली। जिलाधिकारी चमोली गौरव कुमार ने बताया कि जनपद चमोली में उत्तराखंड विद्यालयी शिक्षा परिषद, रामनगर द्वारा आयोजित होने वाली हाईस्कूल एवं इंटरमीडिएट की परीक्षाएं दिनांक 21 फरवरी 2026 से 20 मार्च 2026 तक सम्पन्न कराई जाएंगी। परीक्षाओं को शांतिपूर्ण, निष्पक्ष एवं सुव्यवस्थित ढंग से सम्पन्न कराने के उद्देश्य से उत्तराखण्ड शासन द्वारा आवश्यक निर्देश जारी किए गए हैं।

शासनादेश के अनुसार भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 की धारा 15 (पूर्व की दण्ड प्रक्रिया संहिता 1973 की धारा 21) के अंतर्गत परीक्षा केन्द्र के केन्द्र व्यवस्थापकध्प्रधानाचार्य को विशेष कार्यपालक मजिस्ट्रेट के रूप में नियुक्त किया जा सकेगा। विशेष कार्यपालक मजिस्ट्रेट के रूप में केन्द्र व्यवस्थापक परीक्षा केन्द्र की सीमाओं में कानून व्यवस्था बनाए रखने, अनुचित गतिविधियों पर नियंत्रण तथा परीक्षा संचालन को निर्विघ्न सम्पन्न कराने हेतु आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करेंगे। इसके साथ ही परीक्षा केन्द्रों के 100 गज की परिधि में भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 की धारा–163 के प्रावधानों का अनुपालन सुनिश्चित किया जाएगा, ताकि परीक्षा प्रक्रिया पारदर्शी एवं व्यवस्थित रूप से सम्पन्न हो सके।

श्रम कानून के विरोध में किया प्रदर्शन

संवाददाता हरिद्वार। संयुक्त संघर्षशील ट्रेड यूनियन मोर्चा के तत्वावधान में विभिन्न ट्रेड यूनियनों सहित इंकलाबी मजदूर केंद्र एवं प्रगतिशील भोजनमाता संगठन ने चार श्रम कानून के विरोध में शिवालिक नगर चौराहे के पास धरना प्रदर्शन किया। इसके बाद रोशनाबाद स्थित श्रम विभाग कार्यालय का घेराव कर समस्याओं से संबंधित ज्ञापन उप श्रमायुक्त को सौंपा। प्रदर्शनकारियों ने आरोप लगाया कि चार श्रम संहिताओं से मजदूरों का शोषण किया जा रहा है। इसे तत्काल रद्द किया जाए। इस अवसर पर वक्ताओं ने कहा कि केंद्र और प्रदेश सरकार मजदूर विरोधी सरकार है। देश सुरक्षित हाथों में नहीं है। श्रमिकों को अपनी लड़ाई के लिए सड़क पर उतरना पड़ रहा है। नए नए कानून बनाकर श्रमिकों को बर्बाद किया जा रहा है। सिर्फ कुछ पूंजीपतियों को लाभ पहुंचाने के लिए कार्य हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि मजदूरों के हित में पुराने श्रम कानूनों को मजबूत किया जाए।

पांच करोड़ से अधिक बकाया पर भू–संपत्ति नीलाम होगी

अल्मोड़ा(आरएनएस)। आबकारी देय की बड़ी राशि लंबित रहने पर प्रशासन ने एक बकायेदार की भूमि नीलामी की प्रक्रिया शुरू कर दी है। उपजिलाधिकारी जैंती/भनोली सौम्या गर्ब्याल ने बताया कि ग्राम कुजेली, तहसील भनोली निवासी राधाकृष्ण पुत्र भैरव दत्त पर 5,43,49,753 रुपये की वसूली बकाया है। निर्धारित समय में राशि जमा न करने पर राजस्व प्रावधानों के तहत उनकी भूमि कुर्क की जा चुकी है। प्रशासन के अनुसार उत्तर प्रदेश जमींदारी एवं भूमि व्यवस्था अधिनियम, 1950 की धारा 284 के अंतर्गत कार्रवाई करते हुए संबंधित खातों की कुल 0.179 हेक्टेयर भूमि 18 अक्टूबर 2025 को कुर्क की गई थी। अभिलेखों के परीक्षण के बाद इसमें से खाता संख्या 56 की बसरा संख्या 1588 की 0.001 हेक्टेयर भूमि को अलग रखते हुए शेष 0.178 हेक्टेयर भूमि नीलामी योग्य घोषित की गई है। उपजिलाधिकारी ने बताया कि उक्त संपत्ति की नीलामी 24 फरवरी 2026 को ग्राम कुजेली में आयोजित की जाएगी। नीलामी प्रक्रिया संपन्न कराने के लिए नायब तहसीलदार भनोली को विक्रय अधिकारी नामित किया गया है। प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि बकाया राजस्व की वसूली के लिए यह कार्रवाई विधिक प्रावधानों के अनुरूप की जा रही है।

ईष्ट देवता मटिया महासु ओडारू–जखंडी देव पालकियों की यात्रा,पूजा अर्चना के साथ हुआ शुभारंभ

पुरोला। रामा–कमल सिरांई पट्टी की मुख्य बजार की जात्रा गुरुवार को क्षेत्र के ईष्ट देवता मटिया महासु ओडारू–जखंडी देव पालकियों की यात्रा,पूजा अर्चना के साथ शुभारंभ हुआ। 43 गांव के ईष्ट दोनों देवताओं की पालकियां को गुरुवार को देवता के थान पुजेली गांव से सजा संवार कर कुमोला थोक व गांव–गांव से श्रद्धालुओं की भीड़–ढोल नगाड़ों के साथ मेला स्थल खेल मैदान कमल गंगा तट पर नगर पालिका परिषद की अगुवाई मे पैदल यात्रा के साथ नागराज मंदिर मुख्य बाजार से होते हुए मेले में पहुंची।

देव डोलियों ने मेला स्थल पर रेवन काटकर रंवाई बसतौसव एवं विकास मेले का विशेष पूजा अर्चना व देव पश्चवाओं के आशीर्वाद से विधिवत शुभारंभ किया।

पुरोला के रामा–कमल सिरांई पट्टी के 43 गांव की पौराणिक बजार की जातर का आयोजन सदियों से होता आ रहा है, पहले बजार की जातर का आयोजन समिति के माध्यम से तहसील परिसर में होता आया है व नगर पंचायत गठन के बाद से मेले का आयोजन नगर पंचायत कर रही है। मेले में स्थानीय कलाकारों बैसारी बंधुओं, अजू तोमर, महेंद्र सिंह चौहान की प्रस्तुतियां दी गई जहां क्षेत्र से हजारों लोगों की भीड़ उमड़ी। मेले में दूरदराज गांव से आकर महिलाएं जहां बहार से आये व्यापारियों की दुकानों से रोजमर्रा सामानों की खरिदारी करती हैं वहीं बच्चों–महिलाओं के लिये चरखी,मौत कुंआ, डैरगन, आदि मनोरंजन का भी खुबआनद उठाते हैं। मेला आयोजक नगर पालिका अध्यक्ष बिहारी लाल शाह ने अतिथियों का आभार व्यक्त कर बताया की मेले में रवांई की संस्कृति के संवर्धन एवं संरक्षण को स्थानीय टीमों समेत बहार से प्रसिद्ध गायकों की भी सांस्कृतिक प्रस्तुतियां देंगे।।

इस मौके पर देव माली राजाराम नौटियाल, जगमोहन नोडियाल,रविंद्र नेगी, दिनेश सिंह चौहान राजपाल रावत,धीरेंद्र नेगी सहित गांव–गांव से सैकड़ों महिलाएं,बच्चे आदि मौजूद थे।

जन–जन के द्वार कार्यक्रम के तहत लगा बहुउद्देशीय शिविर

संवाददाता चमोली। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी की महत्वाकांक्षी पहल जन–जन की सरकार, जन–जन के द्वार कार्यक्रम के अंतर्गत विकासखंड गैरसैंण की तहसील आदिबद्री के न्याय पंचायत देवलकोट (कंसुआ) में गुरुवार को बहुउद्देशीय शिविर का आयोजन किया गया। शिविर की अध्यक्षता अपर सचिव उत्तराखंड शासन विनोद गिरी गोस्वामी द्वारा की गई।

शिविर का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में आमजन की समस्याओं का त्वरित समाधान करते हुए विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ पात्र व्यक्तियों तक पहुंचाना रहा। शिविर में विभिन्न विभागों द्वारा लगाए गए स्टालों के माध्यम से कुल 380 लोगों ने सरकारी योजनाओं की जानकारी प्राप्त कर उनका लाभ उठाया। स्वास्थ्य, समाज कल्याण, राजस्व, कृषि, शिक्षा, पेयजल, विद्युत, पशुपालन, आयुर्वेद, होम्योपैथिक, रीप एवं बाल विकास विभाग सहित अन्य विभागों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा मौके पर ही नागरिकों की समस्याओं का समाधान किया गया तथा आवश्यक परामर्श भी प्रदान किया गया।

जिला पंचायत ने ध्वस्त की पुराने अस्पताल की बिल्डिंग

रुद्रपुर(आरएनएस)। तहसीलदार गिरीश चंद्र त्रिपाठी की अगुवाई में जिला पंचायत विभाग ने गुरुवार को पुराने अस्पताल की जर्जर बिल्डिंग को ध्वस्त करने की कार्रवाई शुरू की। पीडब्ल्यूडी गेस्ट हाउस रोड स्थित इस भवन की भूमि पर जिला पंचायत का स्वामित्व है। कार्रवाई के दौरान भारी पुलिस बल तैनात रहा। कोतवाली रोड पर नए अस्पताल भवन के निर्माण के बाद सीएचसी को वहां स्थानांतरित कर दिया गया था। इसके बाद पुराने भवन में कुछ परिवार रहने लगे थे।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक **गार्गी मिश्रा** द्वारा इंटर ग्राफिक आफॅसेट प्रिंटर्श 64 नेशविला रोड़ देहरादून, उत्तराखंड से मुद्रित, 98, 2–फ्लोर, सनशाइन अपार्टमेन्ट, नागल हटनाला, कुल्हान, सहस्त्रधारा रोड, देहरादून – 248001 से प्रकाशित।

सम्पादकः
गार्गी मिश्रा
8765441328

समस्त विवाद देहरादून न्यायालय के अधीन होंगे।